Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 19, Issue No. 3, April-2022, ISSN 2230-7540

कामकाजी और गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों का समायोजन एवं व्यक्तित्व का अध्ययन

श्रीमती सुषमा शर्मा[1*], प्रो.प्रज्ञा शर्मा[2]

[1] अस्टिेट प्रोफेसर, चैहान कॉलेज ऑफ एजुकेशन

[2] प्रोफेसर, आइ्र.ए.एस.कॉलेज

सारांश - *बालकों के विकास पर वातावरण की अन्तक्रिया का स्पष्ट प्रभाव पड़ता है। सृजनन विज्ञान के द्वारा लक्ष्यों को नियंत्रित करने का प्रयास करना चाहिए। निषेधात्मक उपायों के द्वारा निम्नस्तरीय लक्षणों को दूर करने का कार्य किया जा सकता है, जबकि उच्चस्तरीय लक्षणों को बढ़ाया जा सकता है। परिवेश (वातावरण) उन्नत बनाकर व्यक्ति का व्यक्तित्व एवं समायोजन पर विशेष ध्यान दिया जा सकता है।*

प्रस्तुत शोध पत्र में कामकाजी और गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों का समायोजन व व्यक्तित्व का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध हेतु भोपाल शहर के विद्यालयों से 200 विद्यार्थियों को न्यादर्श पद्धति द्वारा चुना गया है, एवं सर्वेक्षण अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया।

उपकरण के रूप में समायोजन के मापने हेतु ए.के. सिंह एवं अल्पना सेन गुप्ता द्वारा विकसित हाईस्कूल एवं एडजस्टमेंट इन्वेंटरी(HSAI) का प्रयोग किया गया। व्यक्तित्व मापने हेतु बहुआयामी व्यक्तित्व सूची कु. मंजू अग्रवाल का प्रयोग किया गया। ऑकड़ों के विश्लेषण विवेचन हेतु सांख्यिकीय प्रविधि के रूप में टी परीक्षण एवं सहसंबंध गुणांक का प्रयोग किया गया। प्रस्तुत शोधकार्य के अनुसार कामकाजी एवं गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों के समायोजन एवं व्यक्तित्व में अंतर पाया गया एवं समायोजन उच्च है तो व्यक्तित्व भी उच्च बनता है, आपस में सहसंबंधित पाये गये।

संकेतक शब्द - *समायोजन व्यक्तित्व कक्षा- हाईस्कूल विद्यार्थी*

----------X----------

प्रस्तावना

शिक्षा शब्द के लिए अंग्रेजी में एजुकेशन(Education) शब्द का प्रयोग किया जाता है। ऐजुकेशन शब्द लैटिन भाषा एजुकेशन शब्द से विकसित हुआ है, ये A(E) तथा डयूको (Duco) का अर्थ है- अंदर से, जबकि डयूको (Duco) का अर्थ है- आगे बढ़ाना अर्थात् शिक्षा के द्वारा व्यक्ति की जन्मजात शक्तियों को अंदर से बाहर की ओर उचित दिशा में विकसित करने का प्रयास किया जाता है।

शिक्षा मनुष्य को पूर्ण करने में महत्वपूर्ण मानी जाती है। शिक्षा के आधार पर ही मनुष्य का बौद्धिक स्तर उन्नत किया जा सकता है। यह उसकी चिन्तन शक्ति का विकास करने में भी उसकी सहायता करती है। शिक्षा मनुष्य के जन्म से लेकर उसकी मृत्यु तक चलने वाली प्रक्रिया मानी जाती है।

केवल पढ़ने-लिखने को ही पूर्ण शिक्षा नही कहा जा सकता है। शिक्षा में प्रत्येक उस अनुभव को सम्मिलित किया जाता है, जिसके आधार पर व्यक्ति के द्वारा अपने जीवन के साथ सामंजस्य स्थापित किया जाता है। यह उसे पूर्णता की ओर विकसित करने मंे विशेष रूप से लाभदायक मानी जाती है।

(1) जॉन डीवी के अनुसार - "व्यक्ति की उन सभी क्षमताओं का विकास शिक्षा है, जो उसे हर संभावना तथा अपने वातावरण को नियंत्रण करने में सहयोग प्रदान करती है।"

(2) स्वामी विवेकानन्द के अनुसार -"मनुष्य की पूर्वनिहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना शिक्षा है।"

(3) ड्रेवर के अनुसार -"शिक्षा एक प्रक्रिया है, जिसमें तथा जिसके द्वारा बालक के ज्ञान, चरित्र तथा व्यवहार को ढाला व परिवर्तित किया जाता है।"

समायोजन

समायोजन वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा मनुष्य अपनी आवश्यकताओं और इन आवश्यकताओं की पूर्ति को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में संतुलन रखता है।

मनोविज्ञान में परस्पर विरोधी आवश्यकताओं को संतुलित करने की व्यवहार-संबंधी प्रक्रिया को समायोजन कहते है। इसी प्रकार पर्यावरण की कठिनाईयों एवं बाधाओं का ध्यान में रखते हुए व्यवहार में जो परिवर्तन किये जाते है, उन्हें समायोजन कहते है।

समायोजन से ही व्यक्ति के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास होता है, जितना मनुष्य परिस्थितियों के अनुसार अपने को बदलने की क्षमता ही उसके व्यक्तित्व के विकास पर निर्भर करता है। घर, परिवार, विद्यालयों में बच्चों को समायोजन का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिये। उन्हें बच्चों को बताना चाहिये कि किस प्रकार घर, समाज की चुनौतियों और अपेक्षाओं से कैसे निपटाना चाहिये।

कोलमैन के अनुसार - "समायोजन व्यक्ति की अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति तथा कठिनाईयों के निराकरण के प्रयासों का परिणाम है।"

अतः हम कह सकते है कि समायोजन वह है जो यथार्थ पर आधारित तथा संतोष देने वाला होता है।

व्यक्तित्व

व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग साधारण बातचीत के दौरान अधिक किया जाता है। साधारण बातचीत में प्रयुक्त व्यक्तित्व शब्द किसी ऐसे गुण या विशेषता को इंगित(बताता है) करता हैं, जिसे सभी व्यक्ति विभिन्न परिस्थितियों में व्यवहार करने तथा पारस्परिक संबंधों की दृष्टि से विशेष महत्व देते है।

व्यक्ति का व्यक्तित्व उसके सम्पूर्ण व्यवहार का एक दर्पण होता है। व्यक्तित्व के स्वरूप को समझने के लिए कई वैज्ञानिकों ने अलग-अलग परिभाषायें दी है:-

गिलफोर्ड के अनुसार -"व्यक्तित्व गुणों का संगठित रूप है।"

शोध कथन

तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए शोध समस्या का शीर्षक निम्नानुसार है:-

"कामकाजी और गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों का समायोजन एवं व्यक्तित्व का अध्ययन"

उद्देश्य

(1) कामकाजी और गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों का समायोजन एवं व्यक्तित्व के संबंध का अध्ययन करना।

(2) कामकाजी और गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों का समायोजन का अध्ययन करना।

(3) कामकाजी और गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों के व्यक्तित्व का अध्ययन करना।

प्रस्तुत शोध की परिकल्पनायें

(1) कामकाजी महिलाओं और गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों के समायोजन एवं व्यक्तित्व के संबंध में अन्तर नही पाया जायेगा ।

(2) कामकाजी महिलाओं और गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नही पाया जायेगा।

(3) कामकाजी महिलाओं और गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों के व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नही पाया जायेगा।

शोध कार्य का सीमाकंन

(1) अध्ययन भोपाल शहर तक सीमित है।

(2) प्रस्तुत अध्ययन में कामकाजी महिलाओं के 100 बच्चे एवं गैर कामकाजी महिलाओं के 100 बच्चे लिये गये है।

(3) प्रस्तुत अध्ययन में शासकीय, अशासकीय हाईस्कूल के विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

उपकरणों का प्रयोग

(1) समायोजन मापनी - ए.के. सिंह

(2) बहुआयामी व्यक्तित्व मापनी - कु. मंजु अग्रवाल

शोध कार्य की प्रविधि

यह अध्ययन सर्वेविधि पर केन्द्रित है। इसमें समंकों का विश्लेषण मध्यमान **N** प्रमाणिक विचलन **SD** तथा **t** परीक्षण, सहसंबंध त तकनीकी परीक्षणों द्वारा निष्कर्षों को प्राप्त किया गया।

परिकल्पना क्रमांक - 01

कामकाजी महिलाओं एवं गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों के समायोजन एवं व्यक्तित्व का संबंध।

चर	N	सहसंबंध गुणांक r	सहसंबंध का विश्लेषण
व्यक्तित्व	100	0-712	सर्थक उच्च धनात्मक सहसंबंध
समायोजन	100		

उपरोक्त तालिका क्रमांक 01 से यह प्रदर्शित होता है कि कामकाजी महिलाओं एवं गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों के व्यक्तित्व एवं समायोजन के मध्य उच्च धनात्मक सहसंबंध गुणांक 0.712 है। अतः शून्य परिकल्पना को निरस्त करते हुए कह सकते है कि कामकाजी महिलाओं एवं गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों में समायोजन एवं व्यक्तित्व के बीच सहसंबंध है।

परिकल्पना क्रमांक - 02

कामकाजी महिलाओं एवं गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों के समायोजन में कोई सार्थक अंतर नही पाया जायेगा।

समूह	संख्या N	मध्यमान M	मानक विचलन SD	मानक त्रुटि SED	युक्तांश ds	मुक्तांश t	सार्थकता स्तर
कामकाजी महिलाओं के बच्चे	100	88-68	21-98	2-236	198	7-186	0-05 सार्थक अंतर है
गैरकामकाजी महिलाओं के बच्चे	100	72-61	9-87				

उपरोक्त तालिका क्रमांक 01 से स्पष्ट है कि परिकल्पित मान 7.186 है, स्वतंत्रता के अंश 198 पर 0.05 सार्थकता स्तरमान 1.97 से अधिक है, इसलिए परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि कामकाजी महिलाओं एवं गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों के समायोजन में अंतर पाया जाता है।

और यह इसलिए दोनों के परिवेश, वातावरण में अंतर होता है। (कही पर कुसमायोजित बच्चे मिलेगें कही पर समायोजित बच्चे)

परिकल्पना क्रमांक - 03

कामकाजी महिलाओं एवं गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों के व्यक्तित्व में कोई सार्थक अंतर नही पाया जायेगा।

समूह	संख्या N	मध्य मान M	मानक विचलन SD	मानक त्रुटि SED	युक्तांश ds	मुक्तांश t	सार्थकता स्तर
कामकाजी महिलाओं के बच्चे	100	244-65	21-80	3-15	198	4-46	0-05 सार्थक अंतर है
गैरकामकाजी महिलाओं के बच्चे	100	230-59	22-86				

उपरोक्त तालिका क्रमांक 03 से स्पष्ट है कि परिकल्पित मान 4.46 है, स्वतंत्रता के अंश 198 पर 0.05 सार्थकता स्तरमान 1.97 से अधिक है, अतः उक्त स्तर पर सार्थक है। परिकल्पना अस्वीकृत होती है। निष्कर्ष कहा जा सकता है कि कामकाजी महिलाओं एवं गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों के व्यक्तित्व में सार्थक अंतर है।

क्योंकि वातावरण के साथ व्यक्ति के समायोजन स्थापित करने से उनकी समायोजन क्षमता चलता है, सही परवरिश उचित वातावरण ही प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व का निर्माण करता है।

समंकों के विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष

शोध पत्र में समायोजन, व्यक्तित्व चरो को लेकर कामकाजी महिलाओं एवं गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों को लेकर सर्वे कार्य किया गया, तथ्यों के विश्लेषण विवेचन के आधार पर परिकल्पनाओं का सांख्यिकीय विश्लेषण पश्चात् निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है। समायोजन वह प्रक्रिया है, जिनके द्वारा मनुष्य अपनी आवश्यकताओं और इनकी पूर्ति हेतु परिस्थितियों में संतुलन स्थापित करने का प्रयास करता है। वातावरण से समायोजन ही उसके उच्च और निम्न व्यक्तित्व का निर्माण करता है। समायोजन चर के अध्ययन पश्चात कामकाजी महिलाओं एवं गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों में सार्थक अंतर पाया गया इनके मध्यमानों में भी अंतर पाया गया। इसी प्रकार व्यक्तित्व चर के विश्लेषण में भी सार्थक अंतर पाया गया एवं गैर कामकाजी महिलाओं के बच्चों का व्यक्तित्व मध्यमान कम पाया गया।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1.डॉ.मंगल एस.के.(2005)- शैक्षिक मनोविज्ञान एवं मापन,मेरठ इंटरनल पब्लिशिंग हाऊस

2. डॉ. पाठक.पी.डी. (1974)-शिक्षा मनोविज्ञान-विनोद पुस्तक मंदिर,आगरा

3. डॉ. गुप्ता.एस.पी.(2005)- सांख्यिकीय विधियॉ

5. भाटिया हंसराज .(1976)- शिक्षा मनोविज्ञान -पुस्तक मंदिर आगरा

6. जनरल ऑफ द इण्डियन अकेडमी ऑफ एप्लाइड साइकोलॉजी वॉल्यूम

Corresponding Author

श्रीमती सुषमा शर्मा*

अस्टिेट प्रोफेसर, चैहान कॉलेज ऑफ एजुकेशन